सम्मान से जीते हुए अपना फर्ज़ निभाते रहिए - मंजू शर्मा

स्त्री को सृजन की शक्ति माना गया है। अर्थात स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन शक्ति को विकसित परिष्कृत कर उसे सामाजिक, राजनैतिक, न्याय, विचार, धर्म, विश्वास, उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सुअवसर प्रदान करना ही सच्चे अर्थों में नारी सशक्तीकरण माना जायेगा।

स्त्रियों के बारे में कुछ इसी तरह के विचार रखने वाली श्रीमती मंजू शर्मा इस बार स्तंभ प्रवासी अतिथि की अतिथि हैं। मंजू शर्मा मुम्बई में ही पली बढ़ी हैं। वे मानती हैं कि हर किसी को शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए । सीखने और पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती। ४१ वर्ष की उम्र में इन्होंने मुम्बई से सामाजिक विज्ञान में स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट से न्यूट्रीशन एण्ड वेट मैनेजमेंट कोर्स करने वाली मंजू जी कुकिंग और गाने की भी रुचि रखती हैं। प्रस्तुत है मंजू शर्मा से हुई संक्षिप्त बातचीत का अंश: ।

प्रवासी चेतना : परिवर्तन संसार का नियम है। ऐसा कौन सा परिवर्तन आप अपने बचपन और आज के बीच महसूस कर रहीं हैं।

मंजू शर्मा : आज के समय में काफी बदलाव आ गया है। पहले बड़ों ने जो कह दिया उसे मानना पड़ता था। जो मानता था वह सही और जो नहीं मानता था वह गलत। इस तरह के और सारे पैमाने थे जो आज के समय में अनुकूल नहीं हैं। परदा प्रथा, घूँघट प्रथा पहले बहुत था आज नहीं है। स्त्रियों को बोलने की आजादी नहीं थी,आज है। प्राचीन काल में महिलाओं का काफी सम्मान था। लेकिन मध्यकाल में इसमें निरंतर गिरावट आती गयी। आज आधुनिक काल में महिलायें कई सारे राजनैतिक और प्रशासनिक पदों पर हैं लेकिन आज भी सामान्य ग्रामीण महिलायें बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। जो भी परिवर्तन हुआ उसमें संतुलन नहीं बन पाया। बेटा बेटी में भेद है। लोग बेटों को तो पढ़ाई के लिए विदेश भेजते हैं लेकिन बहु -बेटियों के लिए दायरे निश्चित हैं। बुजुर्ग वृद्धआश्रम में तो युवा पीढ़ी अपने जीवन में परेशान। जिस तरह का परिवर्तन चाहिए था वैसा नहीं हो पाया है।

प्रवासी चेतना : एक व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का क्या महत्व होता है?

मंजू शर्मा : आपने मोगली के बारे में सुना ही होगा। एक बच्चा बचपन से ही जंगल में,जानवरों के बीच रहता है। वह उन्हीं की भाषा बोलने और समझने लगता है। आसपास के वातावरण का प्रभाव तो व्यक्ति पर पड़ता ही है। व्यक्ति अपना स्वभाव जैसे शर्म,जिद्द,चुप रहना आदि गुण लेकर ही पैदा होता है लेकिन आसपास का वातावरण उसके अनुकूल और प्रतिकूल रहकर उसके स्वभाव में आवश्यक परिवर्तन कर देता है। संस्कार देने का यह अर्थ नहीं कि आप अपनी बातों को दबाव देकर मनवायें। या फिर आप ने जो कह दिया वही सही है। जो भी बातें हम बच्चों को समझायें या बतायें हमें अपनी बातों से उन्हें संतुष्ट करना चाहिए न कि उन पर थोपना। बड़ों को भी बच्चों से संस्कार लेना चाहिए। संस्कार की कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं होती। इसमें संयुक्त परिवार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। एक सुरक्षा होती है। इसके नतीजे अच्छे होते हैं।

प्रवासी चेतना : आपको सामाजिक कार्यों में भी काफी रुचि है। आप आवश्यकतानुसार लोगों की मदद भी करती हैं। आप मे यह गुण किस प्रकार आया?

मंजू शर्मा : शायद यह मेरे संस्कार में ही है। बचपन से ही माता-पिता को अक्सर देखा करती थी जरुरतमंदों की जरुरत पूरी करते हुए। शादी के बाद ससुराल आयी तो वहाँ भी उसी तरह का माहौल मिला। हमारे दादा ससुर, ससुर, पति प्रशांतजी सभी लोग दान धर्म करते ही हैं। मेरे विचार से सिर्फ धन से सामाजिक कार्य या सहायता नहीं होती है। यदि आपने अपना बहुमूल्य समय दिया तो भी बहुत है। आप वृद्धाश्रम चले गए, उनसे बातें कर लिया, उनकी बातें सुन ली, उनके लिए कार्यक्रम कर दिया। मन को सुकून देता है। क्योंकि मैंने यह खुद अनुभव किया है। तन और मन से भी सामाजिक कार्य होता है।

प्रवासी चेतना : आप के नजरिए से धर्म क्या है?

मंजू शर्मा : रोज मंदिर जाना, पूजा करना इत्यादि धर्म का एक भाग हो सकता है लेकिन मेरे दृष्टिकोण से इंसानियत ही इंसान का सबसे बड़ा धर्म होना चाहिए।

इसके अलावा जो हमारा दायित्व है माता पिता के प्रति,बच्चों के प्रति,समाज के प्रति उसे ईमानदारी से निभाया जाय तो वही सबसे बड़ा धर्म होगा।

प्रवासी चेतना : हमारे पाठकों को कोई संदेश देना चाहेंगी?

मंजू शर्मा : जीवन है तो बदलाव निश्चित है। लेकिन बदलाव वही सही होता है जिसमें सबका भलाई छिपा हो। छोटी-छोटी गलतियों को नजर अंदाज करते हुए जीवन में आगे बढ़ें। हम अपने विचारों में बदलाव लाकर जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

मुश्किल से तो एक जीवन मिला है। सबकी सोच अलग अलग होती है। सभी को सम्मान के साथ अपने फर्ज को निभाते हुए ,अपने को व्यस्त रखते हुए हँसी खुशी से जीना चाहिए। सभी अपने आप में थोड़ा बदलाव लाकर जीओ और जीने दो की भावना लायें। सबके विचारों को सम्मान दें। सकारात्मक सोच रखें। जीवन खुशियों से भर जायेगा।